बेहतरीन दोस्त

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुछ बातें बच्चों से

प्यारे बच्चों! तुम स्कूल से लौटने के बाद वहाँ की पढ़ाई और बहुत सारा होम वर्क करने के बाद क्या करना पसन्द करते हो? तुम्हारा दिल तो चाहता होगा कि तुम उस वक़्त सिर्फ़ खेलो या फिर अच्छी और मज़ेदार कहानियाँ पढ़कर अपना दिल बहलाओ।

तो इसी बात को सामने रखकर हमने तुम्हारे लिये बहुत दिलचस्प गेम्स और ख़ूबसूरत रंगीन कहानियों की किताबें तैयार की हैं। इन गेम्स को खेलने और किताबों को पढ़ने से तुम्हारा वक़्त बर्बाद नहीं होगा। उल्टे तुम्हें बहुत सी अच्छी–अच्छी बातें जानने को मिलेंगी। जिनसे तुम आगे चलकर एक कामयाब इन्सान बन सकोगे।

तो फिर देर किस बात की है, अपने घर के बड़ों से कहो कि वो हमसे फ़ोन, ई–मेल या ख़त के ज़रिये राब्ता करें और हमसे तरह–तरह के गेम्स और किताबें मँगवाएं। इन चीज़ों को तुम अपनी बर्थडे के मौक़े पर अपने दोस्तों को तोहफ़े में भी दे सकते हो।

बेहतरीन दोस्त

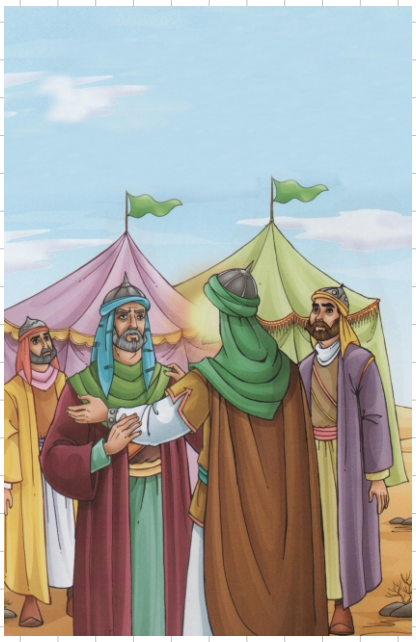

Publisher:

I.Y.O. PUBLICATIONS

Flat No:5, City Centre, Medical College Road, Aligarh - 9259287320

117/P-1/556, Kakadeo, Kanpur - 9336100559

www.imamiayouth.in

शादी के कुछ दिन बाद

(वहबे कलबी)

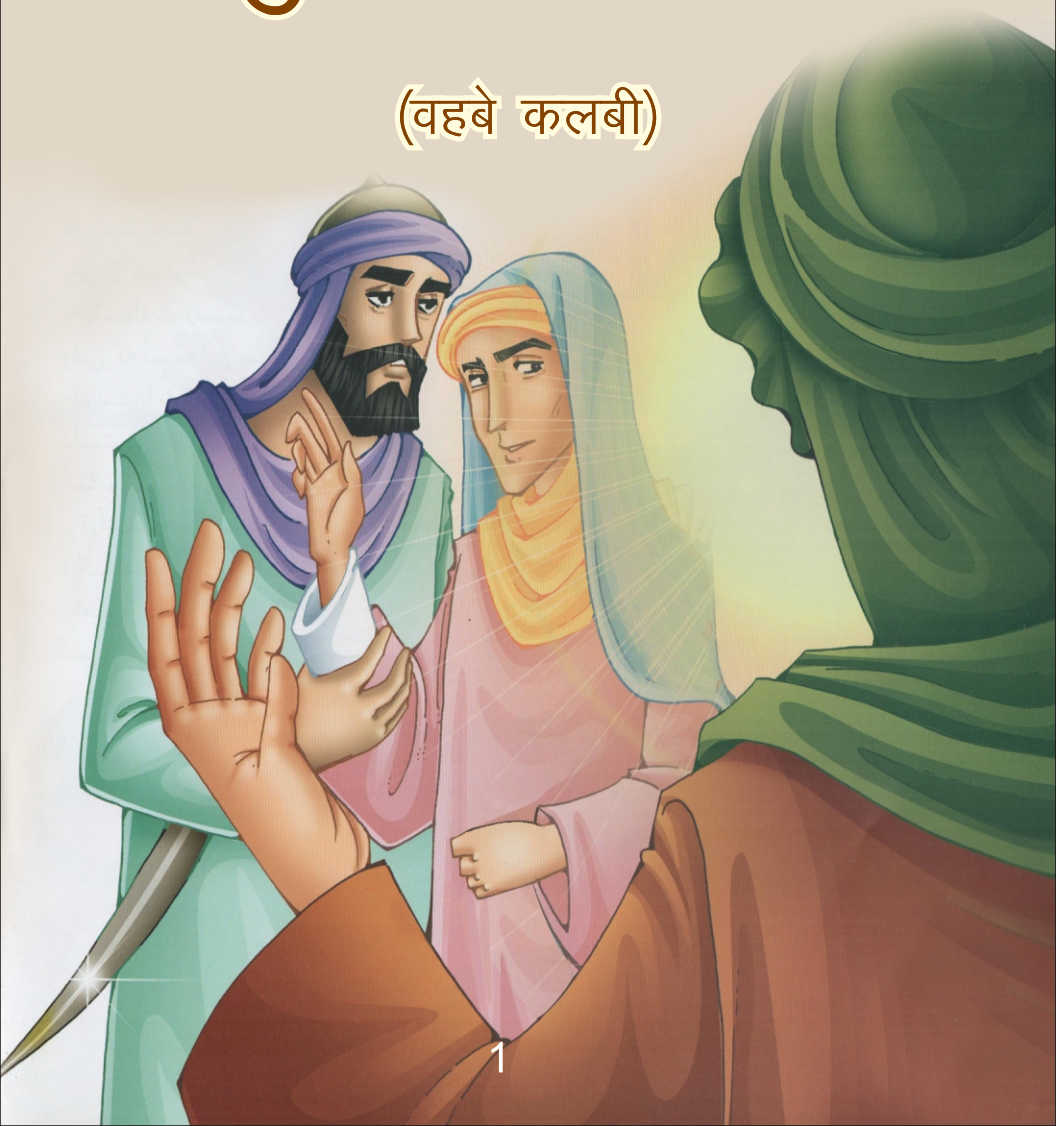

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

इमाम हुसैन (अ) का क़ाफ़ेला करबला की तरफ़ बढ़ रहा था कि अचानक इमाम की नज़र बयाबान में झुलसा देने वाली धूप में लगे एक ख़ेमे पर पड़ी। इमाम ख़ेमे के क़रीब गये तो देखा कि एक बुढ़िया बैठी है। इमाम ने हाल चाल पूछा। तो बुढ़िया ने बताया कि इस वक़्त मेरा बेटा वहब भेंड़–बकरियाँ चराने के लिये गया हुआ है। उसने कहा की कुछ ही दिन पहले मेरे बेटे की शादी हुई है और वो अपने बेटे और बहू के साथ हँसी खुशी ज़िन्दगी गुज़ार रही है। उसने कहा कि हमें बस एक ही चीज़ की तकलीफ़ है और वो ये कि यहाँ पानी की बहुत कमी है। ये सुन कर इमाम ने पास में पड़े एक पत्थर पर नैज़ा मारा तो वो पत्थर टूट गया और नीचे से साफ़ और ठण्डा पानी निकलने लगा। बुढ़िया ये मोजिज़ा देख कर हैरान रह गई। वो बहुत खुश हुई। उसने इमाम का शुक्रिया अदा किया। फिर इमाम ने उसे अपनी कहानी बताई और कहा कि जब वहब वापस आए तो उसे मेरे बारे में बताना और कहना कि मुझे नेक साथियों की ज़रूरत है। उससे कहना कि हक़ का साथ देने और ज़ालिम का मुक़बला करने के लिये हमारे साथ शामिल हो जाए। इतना कह कर इमाम चले आए।

इमाम के जाने के बाद बुढ़िया बेचैनी से अपने बेटे का इन्तेज़ार करने लगी। उसका दिल चाह रहा था कि जितनी जल्दी हो सके वो इमाम के क़ाफ़ेले में शामिल हो जाए। शाम को जब वहब अपने ख़ेमे पर लौटा तो चारों तरफ़ पानी देखा। उसे बेहद ताज्जुब हुआ। तब उसकी माँ ने उसे सारा वाक़िया सुनाया। फिर उन तीनों ने इमाम का साथ देने का फ़ैसला किया और हुसैनी क़ाफ़ेले में शामिल हो गए।

मुहर्रम की दूसरी को ये क़फ़ेला करबला पहुँचा और दसवीं को जंग शुरू हो गई। वहबे कलबी ने भी बहुत बहादुरी के साथ दुश्मनों से जंग की और फिर ज़ख़्मी हो कर घोड़े से नीचे गिरे। ये देखकर वहब की बीवी हानिया ने ख़ेमे की लकड़ी ली और मैदाने जंग की तरफ़ बढ़ी। इमाम ने ये देखा तो हानिया को वापस बुलाया। इमाम का हुक्म सुन कर वो वापस आ गई। दूसरी तरफ़ दुश्मनों ने वहब का सर काट कर उसकी माँ की तरफ़ फेंका। माँ का दिल तड़प उठा। वहब के सर को गोद में लेकर प्यार किया। लेकिन फ़ौरन ही ये कहते हुए लौटा दिया कि हम जो अल्लाह के लिए दे देते हैं उसे वापस नहीं लेते।

बूढ़ा दोस्त

(अनस बिन हारिस)

इमाम हुसैन (अ) के साथ करबला में ऐसे–ऐसे लोग आये थे कि जिसकी मिसाल कहीं नहीं मिलती। उनमें बच्चे भी थे, जवान भी थे और बूढ़े भी। लेकिन न कोई बच्चा अपने आप को बच्चा समझ रहा था न कोई बूढ़ा खुद को बूढ़ा समझ रहा था। सब में जवानों की तरह हिम्मत थी। हर एक के अंदर अल्लाह के लिए कुरबानी देने का जज़्बा था। जिसे देखो वो अपने इमाम पर फ़िदा हो जाना चाहता था। सबके हौसले बुलंद थे। सब अपने इमाम के वफ़ादार थे। अपने मौला की हर बात मानते थे। उनके एक इशारे पर अपनी जान देने के लिये तैय्यार रहते थे।

उन्हीं में से एक अनस बिन हारिस भी थे। अनस इतने बूढ़े थे कि उनकी कमर झुक गई थी, भवें सफ़ेद हो गई थीं और आँखों के पपोटे लटक आये थे। वो इस्लाम की सबसे पहली जंग यानी जंगे बद्र में रसूले खुदा (स) के लश्कर में शरीक थे और जंगे हुनैन में भी मौजूद थे। रसूले खुदा (स) का ये बूढ़ा साथी अब करबला में इमाम हुसैन (अ) पर अपनी जान कुरबान करने के लिये आया था।

आशूर के दिन यज़ीद की फ़ौज ने जंग शुरू कर दी। उधर यज़ीदी फ़ौज में हज़ारों सिपाही थे और इधर इमाम की तरफ़ सिर्फ़ बहत्तर साथी। लेकिन इमाम के इन वफ़ादार साथियों ने दुश्मन से डट कर मुक़ाबला किया। वो इमाम पर अपनी जानें कुरबान करने में एक दूसरे से आगे निकल जाना चाहते थे। अनस ने भी इमाम से जंग के मैदान में जाने की इजाज़त माँगी। इमाम ने इजाज़त दे दी। फिर क्या था, अनस ने अपने सर से अमामा खोला और अपनी झुकी हुई कमर को कस के बाँधा ताकि कमर सीधी हो जाये। आँखों पर लटके हुए पपोटों को ऊपर उठा कर रूमाल से बाँधा ताकि आँखों से देखने में मुश्किल न हो। इस तरह वो एक नौजवान बन कर मैदाने जंग में जाने के लिये तैय्यार हो गए। अनस का ये जज़्बा देख कर इमाम की आँखों से आँसू बहने लगे। इमाम ने उन्हें दुआ दी और कहा कि अल्लाह तुम्हारी कोशिश को क़बूल करे। और फिर अनस मैदाने जंग में दुश्मनों से बहुत बहादुरी के साथ मुक़बला करते हुए श्हीद हो गए।

मैदाने जंग में नमाज़ का वक़्त

(अबू सुमामा सैदावी)

हज़रत अली (अ) के अच्छे और वफ़ादार दोस्तों में से एक अबू सुमामा सैदावी भी थे। वो कूफ़ा के रहने वाले थे और बहुत बहादुर इंसान थे। वो हज़रत अली (अ) के लश्कर में थे। जब हज़रत अली (अ) शहीद हो गये तो वो इमाम हसन (अ) के साथ रहे। फिर एक वक़्त ऐसा आया जब इमाम हुसैन (अ) अपने छोटे से क़ाफ़ेले के साथ करबला पहुँचे उस वक़्त अबू सुमामा भी इमाम का साथ देने के लिये वहाँ पहुँच गये।

करबला में इमाम हुसैन (अ) ने यज़ीदियों को समझाने की बहुत कोशिश कि वो जंग न करें लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। दसवीं मुहर्रम यानी आशूर के दिन जब नमाज़े ज़ुहर का वक़्त हुआ तो अबू सुमामा इमाम के पास आये और बोलेः मौला! मैं देख रहा हूँ कि दुश्मन की फ़ौज आप से जंग करने के लिये क़रीब आ चुकी है। लेकिन मैं आप को उस वक़्त तक शहीद नहीं होने दूँगा जब तक मैं खुद दुश्मन के हाथों से क़त्ल न हो जाऊँ। मौला! मैं चाहता हूँ कि ज़ुहर की नमाज़ आप के पीछे पढ़ूँ उसके बाद अल्लाह के पास जाऊँ। ये सुन कर इमाम ने एक मर्तबा आसमान की तरफ़ देखा शायद वो ये देखना चाह रहे होंगे कि क्या वाक़ई ज़ुहर का वक़्त हो गया है। इसके बाद इमाम अबू सुमामा से बोलेः तुमने नमाज़ को याद किया अल्लाह तुम्हारा शुमार नमाज़ियों में करे। बेशक नमाज़ का वक़्त हो गया है। इन लोगों से कहो कि जंग रोक दें ताकि हम आख़िरी नमाज़ पढ़लें।

इमाम का पैग़ाम दुश्मनों तक पहुँचाया गया कि थोड़ी देर के लिये जंग रोक दें ताकि हम लोग नमाज़ पढ़लें लेकिन वो लोग नहीं माने, उल्टे उन्होंने इमाम के लिए बुरी बात कही।

बहर हाल इमाम और उनके साथियों ने तीरों की बारिश में जामाअत से नमाज़ पढ़ी।

इस तरह अबू सुमामा ने और इमाम के दूसरे साथियों ने अपने अमल से ये बता दिया कि इमाम के चाहने वालों के सामने जितनी भी मुश्किलें हों वो नमाज़ पढ़ना कभी नहीं भूलते। और इमाम हुसैन (अ) ने अबू सुमामा को मैदाने जंग में नमाज़ का वक़्त याद रखने पर दुआएँ दीं। इस बात से ये मालूम होता है कि हमारे इमाम उन लोगों से बहुत खुश रहते हैं जो लोग अपनी ज़िंदगी में नमाज़ को अहमियत देते हैं।

करबलावालों की नमाज़

(सईद बिन अब्दुललाह)

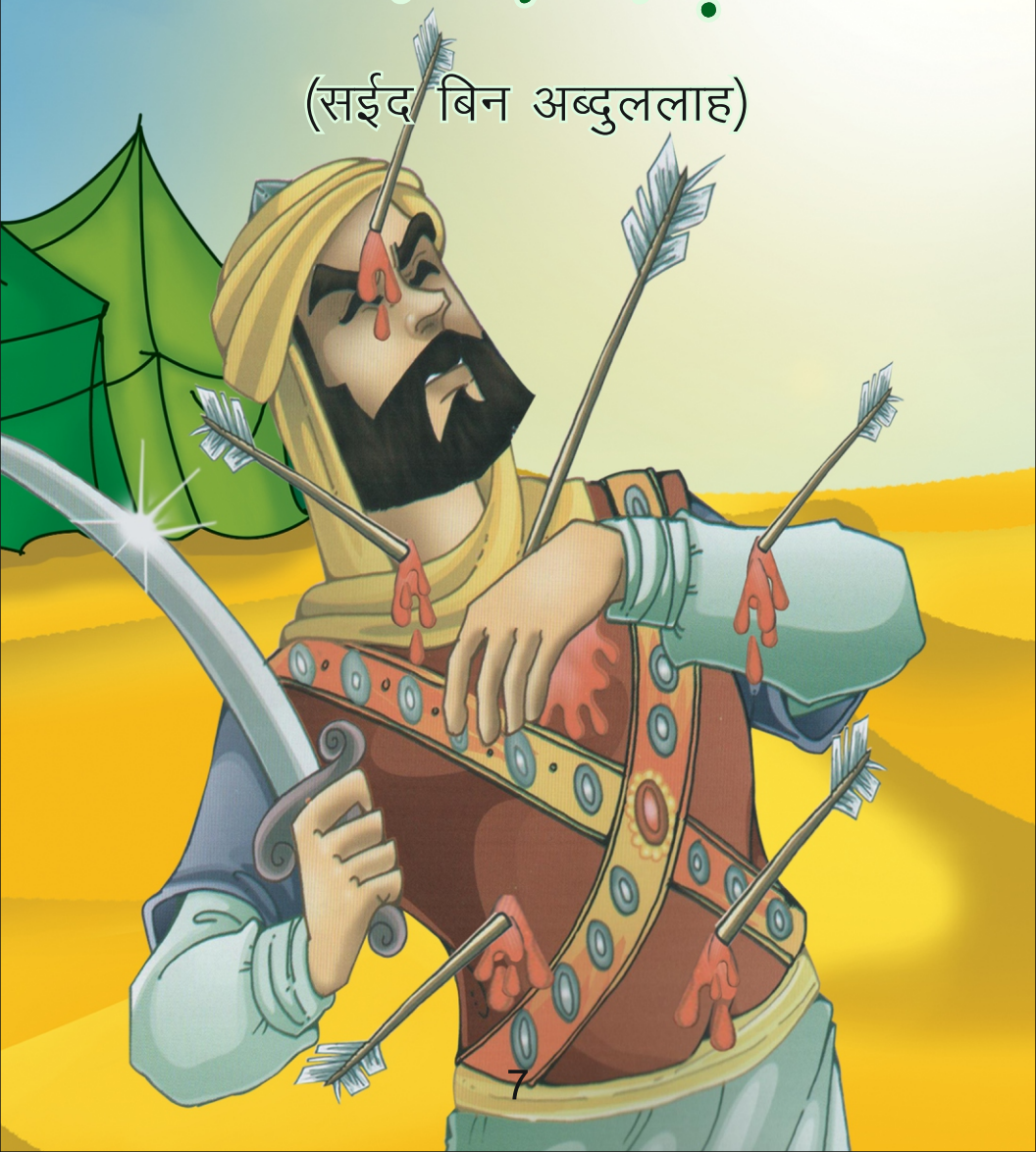

जब इमाम हुसैन (अ) के चचेरे भाई हज़रत मुस्लिम इमाम के हुक्म से कूफ़ा पहुँचे तो वहाँ उन्होने ख़ास लोगों के बीच में इमाम हुसैन (अ) का पैग़ाम पहुँचाया। इमाम का पैग़ाम सुनकर कुछ लोग बहुत ही जोश के साथ हज़रत मुस्लिम के मददगार बन गए। उन्ही नेक, बहादुर और वफ़ादार लोगों में जनाबे सईद बिन अब्दुल्लाह भी थे।

कूफ़ा के हालात बताने के लिये हज़रत मुस्लिम ने इमाम हुसैन (अ) को एक ख़त लिखा। जनाबे सईद वो ख़त लेकर इमाम के पास पहुँचे और फिर वहीं से उनके क़ाफ़ले में शामिल हो गये। इस तरह वो इमाम के साथ ही दूसरी मुहर्रम को करबला पहुँचे।

धीरे–धीरे करबला में दिन गुज़रते रहे यहाँ तक कि नवीं मुहर्रम का दिन भी गुज़र गया और रात का अंधेरा छा गया। उस रात इमाम ने अपने साथियों को इकट्ठा किया। इमाम ने उनसे कहा कि यज़ीद की दुश्मनी मुझसे है। वो मुझे क़त्ल करना चाहता है। ऐसा करो कि रात के अंधेरे में तुम सब यहाँ से चले जाओ। तुम लोगों की जान बच जायेगी। इमाम के सारे दोस्त उनसे बहुत मुहब्बत करते थे। वो किसी भी क़ीमत पर इमाम को अकेला छोड़ कर जाना नहीं चाहते थे। सईद ने इमाम से कहा कि मौला! अगर मुझे क़त्ल कर दिया जाए और मेरी लाश को मिट्टी में मिला दिया जाये फिर ज़िंदा किया जाए फिर क़त्ल किया जाये इस तरह सत्तर बार भी क़त्ल किया जाए तब भी मैं आप का साथ नहीं छोडूँगा। खुलासा ये कि इमाम का कोई साथी वहाँ से नहीं गया।

दसवीं मुहर्रम यानी आशूर के दिन जंग शुरू हो गई। इसी बीच ज़ुहर की नमाज़ का वक़्त आ गया। इमाम ने दुश्मनों से कहलवाया कि थोड़ी देर के लिये जंग रोक दें ताकि नमाज़ पढ़ी जा सके। लेकिन दुश्मन की फ़ौज जंग रोकने के लिये तैय्यार नहीं हुई। ये देखकर इमाम ने उसी मैदाने जंग में जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का फ़ैसला किया। इमाम ने तीरों की बारिश में नमाज़ पढ़ाई। जनाबे सईद और जनाबे ज़ुहैर इमाम के सामने खड़े हो कर अपने बदन पर तीरों को राकते रहे। नमाज़ ख़तम होते–होते जनाबे सईद तीरों से छलनी होकर ज़मीन पर गिर पड़े। सईद ने जब इमाम को देखा बोलेः मौला! क्या मैं ने अपना वादा पूरा कर दिया? इमाम ने कहा हाँ! तुम मुझसे पहले जन्नत में जा रहे हो। इस तरह इमाम का ये वफ़ादार दोस्त भी दुनिया से चला गया।

कमसिन शहीद

(अम्र बिन जुनादा)

अम्र बिन जुनादा बहुत छोटे थे जब वो अपने माँ–बाप के साथ करबाला आये थे। उनके बाबा जनाबे जुनादा बिन हरस रसूल खुदा (स) के सहाबी (साथी) थे। वो जंगे सिफ़्फीन में हज़रत अली (अ) की फ़ौज में शामिल रहे और आख़िर में अपनी बीवी और बेटे के साथ इमाम हुसैन (अ) की मदद करने के लिये करबला आ गए।

अम्र अभी कम उम्र ज़रूर थे लेकिन जवानों की तरह बहादुर थे। उनके हौसले बुलंद थे इमाम पर कुरबान होने का जज़्बा रखते थे। यह सब अच्छाईयाँ उनको अपने माँ–बाप से मिली थीं। एक तरफ़ उनकी माँ ने उन्हें अपने इमाम से मुहब्बत करना सिखाया था। दीन के लिए अपनी जान कुरबान करने का जज़्बा पैदा किया था तो दुसरी तरफ़ उनके बाबा ने इमाम का साथ देने और उनके के दुश्मनों से मुक़ाबला करने का हुनर सिखाया था।

आशूर के दिन वो बक़्त भी आया जब अम्र के बाबा इमाम से इजाज़त ले कर मैदाने जंग में गए और बहुत बहादुरी के साथ दुश्मनों से जंग करते हुए शहीद हो गए। उनकी शहादत की ख़बर सुनकर अम्र की माँ बेटे के पास आईं और बोलीं, मेरे बेटे! तुम्हारे बाबा ने अपनी कुरबानी देदी, अब तुम्हारी बारी है। उठो और तुम भी मौला पर अपनी जान कुरबान कर दो। माँ का हुक्म सुनकर बेटा इमाम के पास आया और जंग करने की इजाज़त माँगी। इमाम ने इजाज़त नहीं दी। अम्र दोबारा इमाम के पास आया और हाथ जोड़ कर बोला मुझे भी जंग करने की इजाज़त दे दीजिए। बच्चे का जज़्बा देख कर इमाम के आखों में आँसू आगए। इमाम ने अम्र से कहा, बेटे! तुम्हारे बाबा अभी–अभी शहीद हुए हैं, तुम्हारी माँ के लिए उनका ग़म ही बहुत है। मैं तुम्हें मरने की इजाज़त कैसे दे दूँ? ये सुनकर उस बच्चे ने कहा, मौला मुझे मेरी माँ ने ही आपके पास भेजा है और कहा है कि जाओ और इमाम से इजाज़त ले कर दुश्मनों से मुक़बला करो। ये जंगी लिबास मुझे मेरी माँ ने ही खुद अपने हाथों से पहनाया है। ये सुन कर इमाम की आँखों से आँसू बहने लगे, उन्होंने बच्चे को अपने सीने से लगया, प्यार किया और फिर जंग करने की इजाज़त दे दी।

इजाज़त मिलते ही बच्चा बहुत तेज़ी से घोड़े पर सवार होकर मैदाने जंग में गया और बहुत बहादुरी से जंग करते हुए शहीद हो गया।

गुमराह कौन?

(अम्र बिन क़रज़ह)

जनाबे अम्र बिन क़रज़ह इमाम हुसैन (अ) से बहुत मुहब्बत करते थे। वो बहुत ही नेक और बहादुर इंसान थे। इमाम की हर बात मानते थे और उनके लिए अपनी जान क़ुरबार करने में कभी पीछे नहीं रहते थे।

छठी मुहर्रम को वो इमाम की मदद करने के लिए करबला पहुँचे। आशूर के दिन उन्हें ये डर था कि कहीं इमाम के ऊपर दुश्मन तीर या तलवार से हमला न कर दे। जनाबे अम्र नहीं चाहते थे कि उनके जीते जी इमाम के ऊपर कोई आँच आए। इस लिए वो हर वक़्त इमाम के आस–पास ही रहते थे ताकि अगर कहीं से कोई तीर या तलवार चलाए तो वो खुद ढ़ाल बनकर उसे अपने ऊपर रोक लें।

बहरहाल एक वक़्त वो भी आया कि जब जनाबे अम्र ने इमाम से जंग की इजाज़त ली और मैदान में आगए। उन्होंने बहुत ही बहादुरी से दुश्मनों का डट कर मुक़ाबला किया। इस तरफ़ एक अकेला इंसान था और उस तरफ़ हज़ारों की फ़ौज थी। आख़िर में ज़ख़्मों से चूर होकर वो इमाम के पास वापस लौटे और बोले, मौला! क्या मैंने आपसे वफ़ादारी का फ़र्ज़ पूरा किया? इमाम ने कहा हाँ! तुम मुझसे पहले जन्नत में जा रहे हो। नाना रसूले खुदा (स) को मेरा सलाम पहुँचा देना और उनसे कहना कि जल्दी ही आपका नवासा हुसैन (अ) भी आ रहा है। ये सुन कर जनाबे अम्र दोबारा मैदाने जंग की तरफ़ पलटे और फिर से जंग की यहाँ तक कि शहीद हो गए।

एक तरफ़ जनाबे अम्र थे जो इमाम से मुहब्बत करने वाले, इमाम के वफ़ादार और उनपर अपनी जान फ़िदा करने वाले थे तो दूसरी तरफ़ उनका एक भाई था जो यज़ीद के लश्कर में था और इमाम की जान का दुश्मन था। जब जनाबे अम्र शहीद हो गए तो उनके भाई ने चिल्ला कर कहा, ऐ हुसैन! तुमने मेरे भाई को गुमराह कर दिया और अपनी मुहब्बत में फँसा कर उसे क़त्ल करवा दिया। इमाम ने जवाब दिया कि इसे अल्लाह ने गुमराह नहीं किया बल्कि इसे सही रास्ते पर आने की हिदायत मिली। गुमराह तू है। ये सुनते ही उसने इमाम के ऊपर तलवार से हमला किया लेकिन इमाम के एक सहाबी ने फ़ौरन उसके हमले को रोक दिया और उल्टे उसी को क़त्ल कर दिया।

देखा बच्चों! किस तरह दो भाईयों में से एक भाई ने जन्नत का रास्ता चुना और जन्नत पहुँच गया और दूसरा भाई जहन्नम का रास्ता चुनकर जहन्नम की तरफ़ गया।

कामयाबी का रास्ता

(ज़ुहैर इब्ने क़ैन)

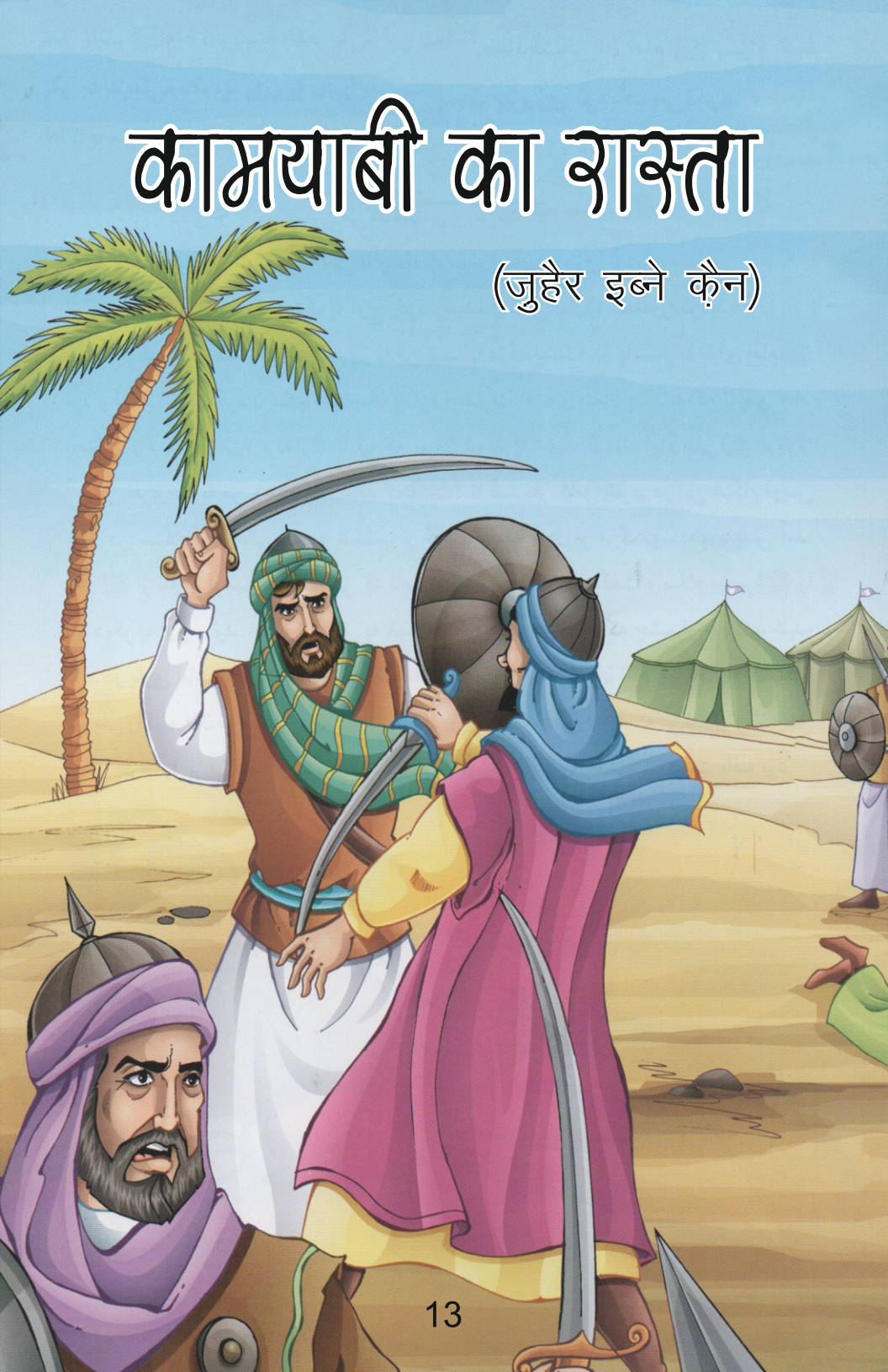

इमाम हुसैन (अ) का क़फ़ेला मक्के से कूफ़े की तरफ़ जा रहा था। रास्ते में इमाम के क़ाफ़ेले ने पड़ाव डाला। यानी एक जगह रुक कर उन्हों ने ख़ेमे लगाए ताकि वहाँ कुछ खा पी लें और आराम कर लें फिर आगे बढ़ें। इमाम ने देखा कि कुछ दूर पर एक और क़ाफ़ेला पड़ाव डाले हुए है। वो क़ाफ़ेला कूफ़े के एक बहुत ख़ास इंसान जुहैर इब्ने क़ैन का था। जुहैर इमाम के तरफ़दारों में से नहीं थे। वो इमाम का साथ देना नहीं चहते थे। इसलिए जान बूझ कर इमाम के क़ाफ़िले से दूर–दूर चल रहे थे कि कहीं इमाम उनको अपने साथ शामिल होने के लिए न कहें।

जब इमाम हुसैन (अ) ने जुहैर के क़ाफ़ेले को पड़ाव डाले हुए देखा तो उन्होंने अपने एक साथी से कहाः जाकर जुहैर से कहो कि इमाम आप से मुलाक़ात करना चाहते हैं। जब ये पैग़ाम जुहैर ने सुना तो वो परीशान हो गए। क्योंकि वो इमाम का साथ देना भी नहीं चाह रहे थे और इंकार करना भी नहीं चाह रहे थे। उनके समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। जब जुहैर की बीवी ने उनकी ये हालत देखा तो बोलीं: रसूले खुदा का नवासा तुमको बुला रहा है और तुम अभी तक गए नहीं? जाकर कर देखो कि इमाम क्या कहना चाह रहे हैं। बीवी की बात सुनकर जुहैर इमाम से मिलने गए। मालूम नहीं इमाम से उनकी क्या बात हुई कि फ़ौरन ही वो अपने ख़ेमे में वापस आए और अपने साथियों से कहने लगे कि मैं इमाम के क़ाफ़ेले में शामिल होने के लिए जा रहा हूँ तुम में से जो शहीद होना चाहता हो मेरे साथ आ सकता है। यह कह कर जुहैर इमाम के क़ाफ़ेले की तरफ़ चले गए।

जुहैर इमाम के ऐसे वफ़ादार साथी बने कि नवीं मुहर्रम को रात के अंधेरे में जब इमाम ने अपने साथियों से कहा कि तुम लोग मुझे अकेला छोड़कर चले जाओ। यज़ीद मेरी जान लेना चाहता है, तुम लोगों की जान बच जाएगी। उस वक़्त जुहैर ने कहाः मौला! अगर मुझे हज़ार बार भी क़त्ल किया जाए और फिर ज़िंदा किया जाए तब भी आप का साथ नहीं छोड़ूँगा।

आशूर के दिन जब बरस्ते हुए तीरों में इमाम हुसैन (अ) जुहर की नमाज़ पढ़ा रहे थे उस वक़्त जुहैर और सईद अपने सीने पर तीरों को रोक कर इमाम की हिफ़ाज़त कर रहे थे। नमाज़ के बाद जब दुश्मनों ने हमला तेज़ कर दिया तब जुहैर मैदान में गए और दुश्मनों से जंग करते हुए शहीद हो गए।

सच्ची मुहब्बत

(हिलाल इब्ने नाफ़े)

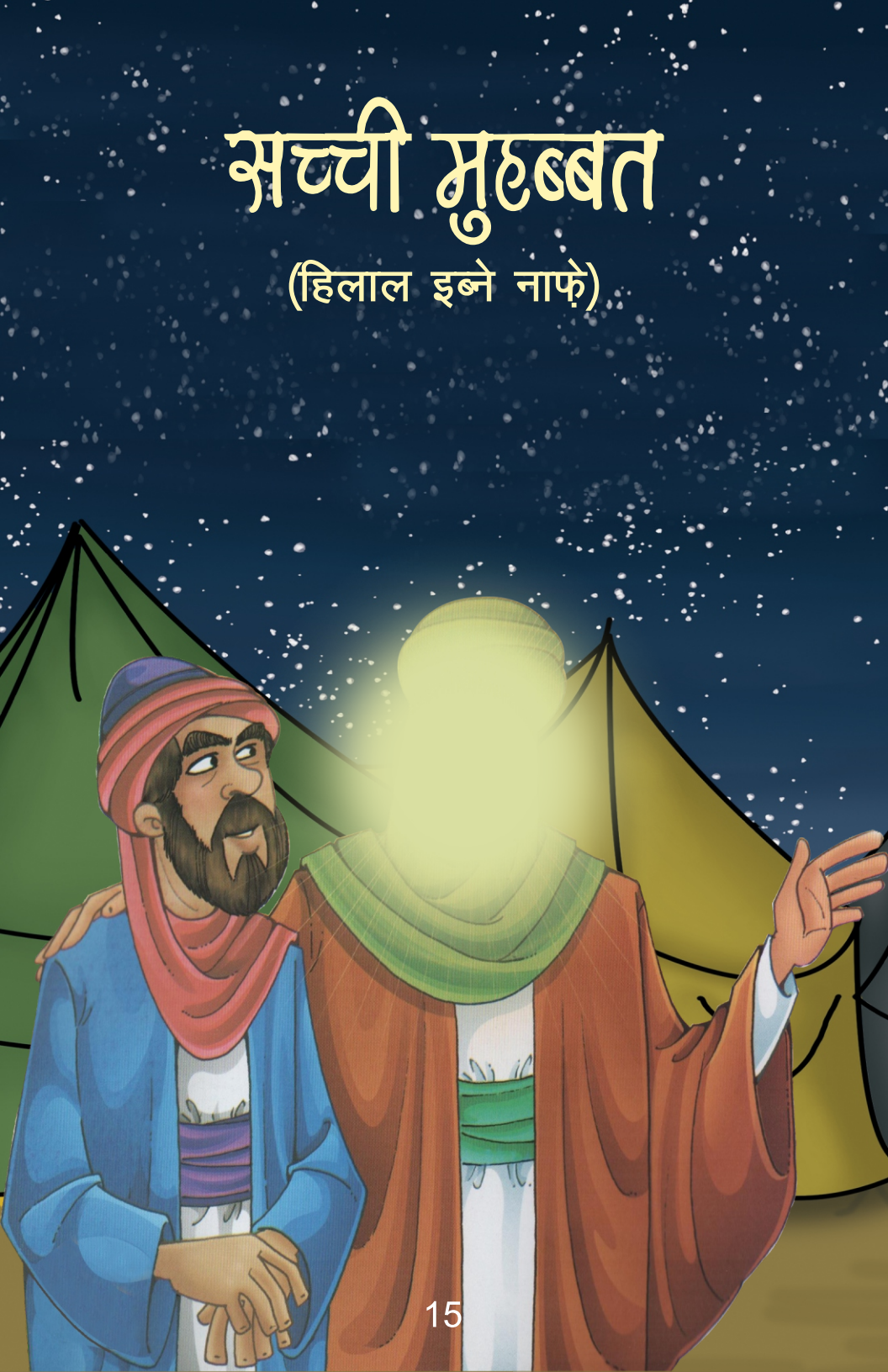

हिलाल इब्ने नाफ़े कूफ़े के रहने वाले एक बहादुर इंसान और माहिर तीर अंदाज़ थे। उनकी बहादुरी को देखकर हज़रत अली (अ) ने उन्हें दश्मनों से जंग करने का तरीक़ा भी सिखा दिया था।

वो इमाम हुसैन (अ) के बहुत अच्छे दोस्त थे। जब कुफ़े में हिलाल ने देखा कि वहाँ का हाकिम इब्ने ज़ियाद इमाम हुसैन (अ) की जान लेना चाहता है तो वो इमाम की मदद करने के लिए मक्का की तरफ़ चल पड़े। इमाम का क़ाफ़ेला कूफ़े की तरफ़ आ रहा था। रास्ते में हिलाल की मुलाक़ात इमाम हुसैन (अ) से हो गई। हिलाल ने इमाम को सलाम किया। इमाम ने उनके सलाम का जवाब दिया और फिर कूफ़े का हाल पूछा। हिलाल ने बताया कि वहाँ के अमीरों और क़बीले के सरदारों को इब्ने ज़ियाद ने माल व दौलत देकर अपनी तरफ़ कर लिया है। रही बात आम लागों की, तो उनके दिल आप की तरफ़ हैं लेकिन उनकी तलवारें आप के ख़िलाफ़ हैं। हिलाल के कहने का मतलब ये था कि कूफ़े के लोग ये जानते हैं कि आप इमाम हैं, सच्चे हैं, रसूले खुदा (स) के नवासे हैं फिर भी आप से जंग करने के लिए तैय्यार हैं।

इमाम हुसैन (अ) के क़ाफ़िले में शामिल हो कर हिलाल करबला पहुँचे। दिन तेज़ी से गुज़र रहे थे। यहाँ तक कि नवीं मुहर्रम की रात आ गई। हिलाल बैठे सोच ही रहे थे कि कैसे इमाम की मदद की जाए कि अचानक उनकी नज़र इमाम के ख़ेमे की तरफ़ गई। उन्होंने देखा कि रात के सन्नाटे में जब चारों तरफ़ अंधेरा छाया हुआ था इमाम अपने ख़ेमे से बाहर निकले और अकेले ही जंग के मैदान की तरफ़ बढ़े। ये देखते ही हिलाल घबरा गए। उन्हों ने फ़ौरन अपनी तलवार उठाई और इमाम के पीछे–पीछे चलने लगे। हिलाल के चलने की आवाज़ सुनकर इमाम ने पूछा मेरे साथ क्यों आ रहे हो? उन्हों ने कहाः मौला! कहीं अंधेरे में दुश्मन आप के ऊपर पर हमला न कर दे, ये सोच कर मैं आ गया। इमाम ने हिलाल से कहाः सामने जो दो पहाड़ दिखाई दे रहे हैं उनके बीच से निकल कर अपनी जान बचा लो। हिलाल इमाम के क़दमों पर गिर पड़े और कहने लगेः मौला! मैं मरते दम तक आपका साथ नहीं छोड़ूँगा। हिलाल ने अपनी बात सच कर दिखाई और आशूर के दिन दुश्मनों से जंग करते हुए शहीद हो गए।

नोटः इस किताब में

(स)= सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम, (अ)= अलैहिस्सलाम

इमाम हुसैन (अ) ने कहा था कि जैसे दोस्त मुझे मिले वैसे न मेरे नाना को मिले न मेरे बाबा को मिले और न मेरे भाई को मिले।

हक़ीक़त यही है कि इमाम हुसैन (अ) के बहत्तर साथी ऐसे **बेहतरीन दोस्त** थे जिन की मिसाल नहीं मिलती। उन दोस्तों में से कोई ये कहता हुआ दिखाई दे रहा है कि मौला! दुश्मन आप को शहीद नहीं कर सकता जब तक वो मुझे क़त्ल न कर ले। तो कोई ये कहते हुए नज़र आता है कि आक़ा! मुझे हज़ार बार क़त्ल किया जाए और फिर हर बार ज़िंदा किया जाए तब भी मैं आप का साथ नहीं छोड़ूँगा।

इमाम हुसैन (अ) के बहत्तर साथियों ने हमें बताया है कि हम को हमेशा अपने वक्त के इमाम की मदद करने के लिये तैय्यार रहना चाहिये। हमें अपने इमाम का हुक्म मानने में कभी भी सुसती से काम नहीं लेना चाहिये। इमाम महदी (अ) को भी ऐसे ही वफ़ादार, बहादुर और सच्चे साथियों की ज़रूरत है। अगर हम चाहते हैं कि हमारे बारहवें इमाम आएँ तो हमें इमाम हुसैन (अ) के बहत्तर साथियों की तरह बनने की कोशिश करना होगा।

Publisher:
I.Y.O. PUBLICATIONS
Flat No:5, City Centre, Medical College Road, Aligarh - 9259287320
117/P-1/556, Kakadeo, Kanpur - 9336100559
www.imamiayouth.in